बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल–स्याम (रोज़ा) अरबी में इसका शाब्दिक अर्थ हैः किसी चीज़ से रुक जाना। और शरीअत के अनुसारः प्रातः काल से लेकर सूर्यास्त तक अल्लाह के लिए रोज़ा की नीयत से उसको तोड़ने वाली चीज़ों से रुक जाना।

रोज़ा के अरकानः (स्तंभ)

❶नीयत, ❷ रोज़ा को तोड़ने वाली चीज़ों से रुक जाना।

रोज़ा में नीयत के प्रकारः

फ़र्ज़ की नीयतः ❶ फ़र्ज़ रोज़ा की नीयत रात्रि ही में अर्थात फज्र से पूर्व कर लेना आवश्यक है, यदि कोई महीना के आरंभ में ही समस्त रमज़ान मास का रोज़ा रखने की नीयत कर ले तो यह भी काफ़ी होगा, नीयत का स्थान हृदय है अतः ज़ुबान से बोल कर इसकी नीयत करना बिदअत है। ❷नफ़्ल रोज़ा की नीयतः दिन के किसी भी भाग में इसकी नीयत कर लेना सही है यदि उस समय तक रोज़ा तोड़ने वाला कोई कार्य नहीं किया हो तो, अलबत्ता नीयत के समय के बाद से उसको अज्र मिलेगा।

रोज़ा के प्रकारः

❶वाजिब (रमज़ान, कफ्फारा और नज़्र –मन्नत– का रोज़ा) ❷ नफ़्ल।

रमज़ान का रोज़ा वाजिब होने की शर्तें

❶इस्लाम। ❷ अक़्ल (चेतना)। ❸ व्यस्क होना (बालक जब समझदार हो जाए तो उसको रोज़ा रखने के लिए प्रेरित किया जाएगा एवं उसके अभिभावक उसे रोज़ा रखने का आदेश देंगे)। ❹ वतन में होना (यात्री पर रोज़ा वाजिब नहीं है, किंतु यदि उसे कष्ट न हो तो रोज़ा रखना ही बेहतर है –क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसा किया है, तथा इसमें अपनी ज़िम्मेवारी से भी अतिशीघ्र फ़ारिग़ हो जाना है, मुकल्लफ (उत्तरदायी) के लिए यह सहज भी है, तथा रमज़ान मास में रोज़ा रखने की फ़ज़ीलत भी उसे प्राप्त हो जाती है–)। ❺ स्वस्थ होना। ❻ हैज़ (मासिक धर्म) तथा निफास (प्रसवोत्तर) से पाक होना।

रोज़ा के समय रोग

इसके दो प्रकार हैं ❶ ऐसा रोग जिसके ठीक होने की आशा न हो, अत्याधिक वृद्ध व्यक्ति भी इसी श्रेणी में आएगा, उसके लिए रोज़ा रखना वाजिब नहीं है किंतु प्रत्येक दिन के बदले एक फक़ीर को खाना खिलाएगा, या तो दिन की गिनती अनुसार मिस्कीन को इकठ्ठा करके उनको दिन का या रात का खाना दे, या प्रत्येक दिन एक मिस्कीन को खाना बाँटे, हरेक मिस्कीन को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साअ के अनुसार एक चौथाई साअ (यदि अच्छी क़िस्म का गेहूँ हो तो इसका वज़न लगभग आधा किलो दस ग्राम होता है) दे, और बेहतर है कि इसके संग कुछ ऐसी चीज़ भी दे जिसा उपभोग बतौर सालन होता है जैसे मांस या तेल इत्यादि। ❷ ऐसा रोग जिसके ठीक होने की आशा हो और उस समय उसके लिए रोज़ा रखना कठिन हो, इस में हैज़, निफास तथा दुग्धपान कराने वाली महिला एवं यात्री शामिल हैं, ये लोग ठीक हो जाने के पश्चात छोड़े हुए दिन के अनुसार रोज़ा रखेंगे और यदि उससे पूर्व ही मृत्यु को प्राप्त हो गए तो उनसे रोज़ा माफ हो जाएगा।

रमज़ान का महीना कैसे साबित होगा?

यह प्रमाणित होगाः ❶ चाँद देख कर। ❷ या शाअबान मास के तीस दिन पूर्ण होने पर।

रोज़ा को ख़राब व फासिद करने वाली चीजें

(इसमें अज्ञानी तथा भूलवश इसको करने वाले शामिल नहीं हैं) ❶ जानबूझकर खाने अथवा पीने वाला, जो भूलवश ऐसा करे उसका रोज़ा सही है। ❷ संभोग करना, यदि ऐसा रमज़ान मास के दिन में किया हो और रोज़ा रखना उस पर वाजिब था तो उसपर मुग़ल्लज़ा कफ्फारा वाजिब है, जो इस प्रकार हैः एक गुलाम आज़ाद करना, यदि इसकी शक्ति न हो तो दो महीने के लगातार रोज़े रखना, यदि इसमें भी असमर्थ हो तो साठ फक़ीर को खाना खिलाना। ❸ अंतरंगता, चुम्बन अथवा आलिंगन इत्यादि के द्वारा वीर्य स्खलन। ❹ ऐसी वस्तु का उपयोग जो खाने पीने के समान हो, जैसे स्वास्थ्यवर्धक सूई लगवाना, किंतु सूई यदि स्वास्थ्यवर्धक न हो तो रोज़ा नहीं टूटेगा।

❺हिजामा (पछना) के द्वारा रक्त निकलवाना, किंतु यदि थोड़ा सा ख़ून जाँच इत्यादि के लिए निकलवाया जाए तो रोज़ा नहीं टूटेगा। ❻जानबूझकर उलटी करना। ❼ हैज़ अथवा निफास का ख़ून निकलना।

रोज़ा में मुस्तहब (प्रिय, उचित) कार्य

❶सेहरी खाना। ❷सेहरी खाने में देर करना। ❸ इफ़्तार करने में जल्दी करना। ❹ रुतब (डम्हा खजूर) से इफ़्तार करना, यदि यह मयस्सर न हो तो (पका) खजूर से, यदि यह भी न हो पानी के कुछ घोंट से और यदि कुछ भी न हो तो दिल में इफ़्तार की नीयत करले। ❺ इफ़्तार के समय तथा रोज़े की हालत में दुआ करना। ❻ अधिकाधिक सदक़ा व ख़ैरात (दान–पुण्य) करना। ❼ रात्री की नमाज़ (तरावीह) पढ़ने का प्रयास करना। ❽ क़ुरान की तिलावत (पाठ) करना। ❾उमरा करना। ❿ यदि कोई उसको गाली दे तो पलट कर गाली देने के स्थान पर कहना किः मैं रोज़ेदार हूँ। ⓫ लैलतुल क़द्र (क़द्र –मान– वाली रात्री) को खोजना। ⓬ अंतिम दहाई (दस दिनों) में ऐतकाफ करना।

रोज़ा में मकरूह तथा जायज़ कार्य

❶कुल्ली करने तथा नाक में पानी डालने में मुबालग़ा (अतिशयोक्ति) करना। ❷ बिना किसी आवश्यकता के खाना चखना।

रोज़ेदार के लिए थूक निगलना, आवश्यकता के समय खाना चखना, स्नान करना, मिस्वाक करना, इत्र लगाना तथा ठंडक हासिल करना जायज़ है।

रोज़ा में हराम (निषिद्ध) कार्य

❶कफ निगलना रोज़ेदार के लिए हराम है, किंतु इससे रोज़ा नहीं टूटेगा। ❷ जिसका स्वयं पर नियंत्रण न हो उसके लिए पत्नी का चुम्बन लेना। ❸ ज़ूर बोलना (यह प्रत्येक हराम कार्य करने को कहते हैं)। ❹जिहालत भरे कार्य करना (अर्थात बेवक़ूफ़ी करना, तथा संयम से काम न लेना)। ❺ मुसलसल रोज़े रखना (अर्थात दो दिन तक लगातार बिना इफ़्तार किए रोज़ा रखना)।

नफ़्ल रोज़ा

❶जिसने रमज़ान के रोज़े रखे हों उसका शव्वाल के छः रोज़े रखना,

और बेहतर यह है कि दूसरे दिन से लगातार छः रोज़ा रख ले। ❷ हाजियों को छोड़कर दूसरे लोगों का अरफा के दिन रोज़ा रखना। ❸ आशूरा (दस मुहर्रम) को नौवीं और ग्यारहवीं मिलाकर रोज़ा रखना। ❹ सोमवार तथा जुमेरात को रोज़ा रखना, सोमवार की ताकीद ज़्यादा है। ❺ प्रत्येक महीना में तीन दिन रोज़ रखना, और बेहतर यह है कि प्रत्येक हिजरी महीना के 13, 14 तथा 15 तारीख़ (अय्याम –ए– बीज़) को रोज़ा रखे। ❻ एक दिन बीच करके रोज़ा रखना। ❼ अल्लाह के महिना मुहर्रम में (अधिकाधिक) रोज़ा रखना। ❽ 9 ज़िल्हिज्जा को रोज़ा रखना। ❾शाअबान में रोज़ा रखना किंतु पूरे महीना का न रखे।

मकरूह रोज़े

जुमा (शुक्रवार), सनीचर (शनिवार) और इतवार के दिन विशेष करके रोज़ा रखना, किंतु यदि किसी कारणवश इस दिन रोज़ा रखे जैसे इस दिन अरफा आजाए, तो कोई हर्ज नहीं।

हराम रोज़े

❶विशेषतः रजब के रोज़े रखना। ❷ शक के दिन रोज़ा रखना, किंतु यदि कीसी की आदत हो कि वह उस दिन रोज़ा रखता हो तो कोई बात नहीं। ❸ ईद व बकरीद के दिन रोज़ा रखना। ❹तशरीक़ के दिनों में रोज़ा रखना, सिवाय उस हाजी के जिसके पास क़ुर्बानी का पशु न हो। ❺ सालोंसाल तक लगातार रोज़ा रखते जाना।

फ़ित्रा (ज़कात –ए– फ़ित्र)

किसी मुस्लिम पर रमज़ान के अंतिम दिन का सूरज अस्त हो जाने के बाद यदि उसके पास उसके स्वयं व परिवार के लिए ईद के दिन तथा रात तक के लिए पर्याप्त भोजन तथा अति आवश्यक ज़रुरतों से एक साअ अधिक हो तो उस पर फ़ित्रा वाजिब है, और पेट में पलने वाले बच्चे की ओर से फ़ित्रा निकालना मुस्तहब है।

इस (फ़ित्रा) की हिकमत व कारण

❶रोज़ेदार को बुराई तथा बेकार किए गए कार्यों से पाक करना। ❷ फ़क़ीरों को ईद के दिन हाथ फैलाने से बेपरवाह कर देना।

ज़कात –ए– फ़ित्र निकालने का समय

❶जायज़ समयः ईद से एक या दो दिन पूर्व। ❷ मुस्तहब वक़्तः ईद के दिन फज्र के बाद से लेकर ईद की नमाज़ पढ़ने तक। ❸ हराम वक़्तः ईद की नमाज़ पढ़ लेने के बाद।

ज़कात –ए– फ़ित्र की मात्रा

जिसका उपभोग व्यक्ति करता है उस अन्न में से एक साअ निकालना, अतः नक़दी निकालना जायज़ नहीं है (साअः यदि अच्छी क़िस्म का गेहूँ हो तो इसका वज़न लगभग दो किलो चालीस ग्राम होता है)।

ईद की नमाज़

यह नमाज़ प्रत्येक व्यक्ति पर फर्ज़ है, जो सूर्य के एक नेज़ा पर पहूँचने के पश्चात पढ़ी जाएगी, किंतु यदि नमाज़ छूट जाए तो इसकी कोई क़ज़ा नहीं है, सुन्नत यह है कि इसे आबादी से बाहर सहरा अर्थात ख़ाली मैदान में अदा किया जाए, मस्जिद में अदा करना भी जायज़ है, ईद की नमाज़ के लिए निकलने के पूर्व विषम अदद में खजूर खाए, साफ सुथरा होकर, इत्र लगाकर तथा सबसे अच्छा कपड़ा पहन कर एक रास्ते से जाए तथा दूसरे रास्ते से लौटे, एक दूसरे को تقبل الله منا ومنكم –तक़ब्बलल्लाहु मिन्ना व मिनकुम– (अल्लाह हमारी व आपकी ओर से क़बूल करे) कहते हुए मुबारकबाद देने में कोई हर्ज नहीं, ईद की रात से लेकर ईद के दिन का सूरज डूबने तक प्रत्येक नमाज़ के पश्चात मुतलक़ तौर पर तकबीर कहना सुन्नत है जिसके वाक्य इस प्रकार हैः الله أكبر، الله أكبر، لا إله إلا الله، والله أكبر، الله أكبر، ولله الحمد अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इलाहा इल्लल्लाह, वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, वलिल्लाहिल ह़म्द (अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं, और अल्लाह सबसे बड़ा है, हरेक प्रकार की प्रशंसा केवल उसी एक अल्लाह के लिए है), नमाज़ का तरीक़ा इस प्रकार हैः ख़ुत्बा के पूर्व दो रकात नमाज़ पढ़ना जिसके पहली रकात में तकबीर –ए– तहरीमा के बाद छः तकबीर कहना, और दूसरी रकात में क़िराअत से पहले पाँच तकबीर कहना, क़्याम के तकबीर के अतिरिक्त।

रोज़ा से संबंधित महत्वपूर्ण बातें

शैख़

हैसम बिन मुहम्मद जमील सरहान

शिक्षक मस्जिद –ए– नबवी

WWW.ATTASSEEL-ALELMI.COM